प्रभु राम से विनय–वार्ता

स्वामी डा. विश्वामित्र

(गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ''कल्याण जून २००४)

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः
परमात्मा श्री राम, परम–सत्य, प्रकाश–रुप,
परम ज्ञानानन्द स्वरुप, सर्वशक्तिमान,
एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परम पुरुष,
दयालु, देवाधिदेव तुझको बार बार
नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।।

हे सच्चिदानन्द–घन परमात्मा ! हे अविनाशी परमात्मा! सर्वअन्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वविद्यमान, अतिशय दयालु कृपालु, करुणानिधि प्रभु, तेरे बच्चे तेरे दरबार में बैठे हैं। हम सब का दण्डवत प्रणाम स्वीकार करो। दया करो, कृपा करो हमारे ऊपर। सत्य है मेरे राम ! तुझे मुंह दिखाने योग्य नहीं, भीतर

स्वामी डॉ. श्री विश्वामित्र

(जन्म–15 मार्च सन् 1940) परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अन्तरंग शिष्य डॉ. श्री विश्वामित्र जी महाराज ने ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसिज़, नई दिल्ली में 22 वर्षों तक गौरवशाली सेवा की। आप एशिया के अकेले ''ऑक्यूलर माइक्रोबायोलोजिस्ट'' के रुप में विख्यात हुए। आपकी वाणी में विलक्षण तेज, ओज एवं सत्य का प्रभाव है। आपके प्रवचन एवं भजन कीर्तन–गायन से सभी श्रोतागण मुग्ध हो जाते हैं। आपके तप का प्रभाव आपके तेजोमय मुख–मण्डल से स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

आप अपने आवागमन एवं भोजन का पूरा व्यय स्वयं वहन किया करते हैं, तथा किसी से कोई भेंट स्वीकार नहीं करते।

आप राम–नाम को जीवन का एक मात्र उद्देश्य बनाते हुए, पूज्य श्री स्वामी जी महाराज द्वारा स्थापित आदर्श परम्पराओं का दृढ़तापूर्वक निर्वहन करते हुए अपने तेजोमयी प्रभा–मण्डल से समूचे भारत एवं विश्व को प्रकाशित कर रहे हैं। आप दर्शन मात्र से ही सबको आनन्दित एवं प्रफुल्लित कर देते हैं।

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं आप।

झांक कर देखें, तेरे सामने आने के योग्य नहीं। साहस करके परमात्मा तेरे दरबार में आये हैं प्रभु, हमारा बारम्बार प्रणाम स्वीकार करो, स्वीकार करो।

आपकी महिमा अपरंपार है प्रभु। जो असम्भव को सम्भव करदे वही 'राम' है, वही परमात्मा है। परमेश्वर सोचता हूं, ऐसा कार्यक्रम जो अभी यहां शिकागो में करवा रहे हो, हरिद्धार जैसी पुण्य भूमि पर, मातेश्वरी गंगा के किनारे होता है। कुछ और स्थानों पर भी होता है। आज परमेश्वर यहां करवा रहे हो। बात यही हुई न, जो जहां चाहो करवा सकते हो। जहां शुरु हो जाता है, वही स्थान तीर्थ स्थान हो जाता है, वही धरती धन्य हो जाती है। तेरी कृपा अपरंपार है परमात्मा, तेरी महिमा अपरंपार है, अवर्णनीय है, अतुलनीय है। हम सब आपके ऋणी हैं प्रभु।

आपका दासनुदास, परमात्मा ! आपके हजूर में कुछ एक विनतियां लेकर आया है, इसी आशा से कि संत महात्मा कहते है, ''जो भी इस दरबार में आता है, द्वार पर दस्तक देता है, मेरे राम उसकी झोली भर कर भेजते हैं।'' कभी कोई, खाली नहीं तेरे द्वार से गया। हमारी खाली झोली भी खाली नहीं जायेगी। भर कर भेजना तेरा स्वभाव है परमात्मा। कहते हैं तू दे दे के नहीं थकता, हम ले ले कर तुझे बिसराते जाते हैं। परमात्मा ! नाशुक्रे हैं, हम। तेरा धन्यवाद भी ठीक ढंग से नहीं करना जानते। लेकिन हे राम! इतने दिनों से जो यहां कार्यक्रम करवाये हैं, उन सबके लिये, हमारा रोम रोम आपके प्रति कृतज्ञ है।

भिखारी हैं परमात्मा ! तेरे दरबार के। भीख मांगने के

लिये आये हैं। मेरे राम, प्रारब्ध के अनुसार बहुत कुछ मिल रहा है। तू प्रारब्ध भी बदल सकता है। प्रारब्ध में जो लिखा है उसे काट भी सकता है। प्रारब्ध के साथ साथ, तेरी अनुकम्पा है, तेरी कृपा है, सब दिख रहा है। धन की कोई कमी नहीं, किसी चीज़ की कोई कमी नहीं। मेरे जैसा व्यक्ति तो, ये सब कुछ देख कर यही कहेगा, ''हे परमात्मा! हम फिर भी गरीब हैं।'' यदि धन से अमीरी होती परमेश्वर, संसार की दृष्टि में तो हैं, लेकिन तेरी दृष्टि में तो बिल्कुल गरीब हैं, दरिद्री हैं। डालर होते हुए भी, रुपये होते हुए भी, निर्धन हैं। धनी तो वही है, परमात्मा ! जिसने राम धन कमाया है, संतोष धन कमाया है, जिसने सत्कर्म की पूंजी इकट्ठी करी है, वही है वास्तविक धनवान्। हम तो दिखावे के धनवान् हैं। अधिक खाने वाले, अधिक पीने वाले, अधिक सोने वाले, अधिक बोलने वाले, अधिक सोचने वाले। जीवन में, कोई नियम तो परमात्मा है नहीं। एक ही नियम है –सुबह घर से निकलना, रात को थके मांदे घर पर आना। घर से खा कर जाना, घर आकर खा लेना। आकर सो जाना, यही हमारा जीवन है। काश ! इससे तू संतुष्ट हो जाता। लोक तो ठीक चल रहा है परमात्मा ! लेकिन परलोक का तो कोई ख्याल नहीं। यहां तो हमें थोड़े दिन ही रहना है, वास्तव में तो अपने घर ही जाना है, जो दूर है, वहीं जाना है। उसकी अभी कोई चिन्ता नहीं परमात्मा। कोई भेजना, संत महात्मा, जो कुछ बता सके, तेरी बातों का बोध करवा सके 'कहां भटकते फिरते हो ? ये सब बड़े आलीशान मकान, इतना सब कुछ, सुख सुविधा मैंने इस

लिये प्रदान की हुई है कि आप किसी बात का अभाव महसूस न करके, मेरे नाम का, अधिक से अधिक जाप करो। वह सब कुछ तो, ले रहे हो मेरे से, पर मुझे ही भूल रहे हो। कैसे हो आप?'' यह परमात्मा का उलाहना है। ये परमात्मा की शिकायत है हमारे प्रति। धन्य हैं वे, जो ये सब कुछ होते हुए भी, हर प्रकार की सुख सुविधा होते हुए भी, आवश्यकता से अधिक सुख सुविधा होते हुए भी, ईश्वर का नाम जप रहे हैं, उसके पतित पावन नाम का आराधन कर रहे हैं। परमात्मा ! यह दास, उन सबके श्री चरणों में मस्तक झुकाता है, जो नाम की कमाई कर रहे हैं, यह उनका भी दास और तेरा भी दास।

भीख मांगता हूं सबके लिये। मेरे परमात्मा ! सदबुद्धि दे। ये नशे उतार दे हमारे। ये शराब के नशे से बहुत बुरे है। भयानक नशा, यश–मान का नशा, उत्कृष्टता का नशा, superiority का नशा। मेरा मकान उससे बड़ा, मेरे पास उससे अधिक कारें हैं। ये नशे बड़े बरबाद करने वाले हैं। मेरे राम! तेरे अतिरिक्त, ये काम, कोई भी नहीं कर सकता। बाकी चीज़ें तो बाज़ार से मिल जाती है, दुकान में मिल जाती हैं, पर ये सब कुछ तेरे द्वार से ही मिलता है। अन्यथा नहीं। किसी संत महात्मा की चरणों की धूलि माथे पर लेने से ही ये सब कुछ होगा, नहीं तो नहीं। तेरी भक्ति, बाज़ार से नहीं मिलती। यह वैराग्य, बाज़ार से नहीं मिलता। भगवत्प्रेम, बाज़ार से नहीं मिलता। परमात्मा ! इन सब का दाता तू। तुझ दाता–शिरामणि से भीख मांगते हैं। आज के बाद, तेरा नाम कभी न भूलें। तुझे कभी न भूलें। जिस प्रकार तू हमें याद करता है परमात्मा ! उससे अधिक तुझे याद

करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हम तेरे ऊपर कोई एहसान नहीं कर रहे। हमारी भलाई इसी में है और तू हमारा भला ही सोचता है। तू हमारे भले के अतिरिक्त, कुछ सोच ही नहीं सकता। तुझे क्या पड़ी है, तुझे कोई याद करे न करे। तुझे क्या फर्क पड़ता है, यदि तू चाहता है, हम तुझे याद करें तो परमात्मा तुझ जैसा उपकारी कौन? कोई नहीं। तभी कहता हूं न बार–बार, मेरे राम ! कि तेरा दिया–किया कभी नहीं चुका सकते। परम उपकारी है परमात्मा तू। मां बाप भी नहीं ऐसे निःस्वार्थी, उनको भी कुछ न कुछ चाहिये होता है। तू ही है एक, जो हमारा भला हित चाहता है, कल्याण चाहता है और उसके बदले में कुछ नहीं चाहता।

धन्य है तू मेरे राम। कृपा कर हमारे ऊपर। भक्ति करनी नहीं आती, प्रेम करना नहीं आता, तेरा नाम जपना नहीं आता। दूसरों को दुःख ही दिये हैं जिन्दगी में। दुःखों की खान हैं हम। औरों की तो नहीं, अपनी जानता हूं, अपने लिये ठोक बजा कर कहता हूं, परमात्मा ! संसार का कोई ऐसा जुर्म नहीं, अपराध नहीं, पाप नहीं, जो मैंने नहीं किया। फिर भी तेरी महिमा है परमात्मा ! जो तू स्वीकार करता है। कैसे भूलें हम तुझे ? कैसे तेरे उपकारों को भूलें ? कैसे भूले तेरी महानता को, दया को, तेरी कृपा को, तेरी क्षमा को ? परमात्मा ! मुझ जैसा कोई और भी बैठा है तो, उसे भी स्वीकार कर लेना। बाकी सब को आपने स्वीकार कर लिया है। कोई मेरे जैसा निकम्मा, नलायक हो उसे भी अपनी चरण शरण देना, उससे अपना नाम जपवाना, उसके दुःख दूर करना, उसे भी सद्गुणों से सम्पन्न कर देना।

हे राम ! शराब का नशा, तो थोड़ी देर के बाद उतर जाता है, लेकिन ये मान का, धन का, superiority का नशा परमात्मा ! इतनी असानी से नहीं उतरता और नशे में आदमी लड़खड़ाता है। कभी इधर गिरता, कभी उधर गिरता है। हमारे लिये पाप करने का कारण यही है। परमात्मा ! यह नशा जिसे 'अभिमान' कहते हैं, तेरे आगे झुकने नहीं देता, न तेरों के आगे झुकने देता है। हम पुरुष हैं, हम पति हैं, ये सब कुछ भूलने नहीं देता यह नशा। यदि ये न उतरे तो हे राम ! इस जीवन में नम्रता कैसे आयेगी ? उतार परमात्मा, हमारे सिर से ये नशे उतार। तेरे आगे झोली फैला कर बैठें हैं हम सब। हमारी झोलियां भर दे। हे ईश्वर ! ये अभिमान, यश मान इनको चकनाचूर कर दे। परमात्मा ! तेरे अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। ये अभिमान टूटे, तो झुकना सीख सकेंगे। तेरे आगे भी और जो तेरे हैं, उनके आगे भी। यह अभिमान है परमात्मा ! जिसके कारण हमें बारम्बार क्रोध का (attack) दौरा, tension का दौरा पड़ता है। यही दौरे हैं, जो हमें दिल का दौरे के लिये तैयार करते हैं। किस बात का नशा है? परमात्मा ! सब कुछ तेरा है मेरा कुछ भी नहीं, यह बात हमारी समझ में आ जाये तो तेरी कृपा से ये नशा भी उतर जाये। कोई सद्‌गुण अपना नहीं, कुछ भी दिया है वह सब अपना नहीं, सब कुछ तेरा है।

''मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सब तोर,
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर ।''

मेरे परमात्मा ! ये सब कुछ तेरा है। तू ही, सब कुछ करवाने वाला है। तू ही, सब कुछ करने वाला है। इसी सत्य

का बोध हम सब को करवा। बहुत कुछ मांग लिया है परमात्मा ! पर और किस से मांगे ? और कौन है देने वाला? परमात्मा ! कृपा कर, हमारे ऊपर दया कर। हमारे ऊपर, हे सांई ! दया कर, कृपा कर। दाता शिरोमणि ! दया कर हमारे ऊपर। हम नलायक, बेशक तुझे भूलते रहें, पर तू न हमें कभी भूलना। मेरे राम ! इससे बड़ा दुर्भाग्य का दिन, इससे बड़ा दुर्दशा का दिन कोई नहीं, जिस दिन तू हमें भूल जायेगा।

मेरे परमात्मा ! देख, तेरे बच्चे तेरे दरबार में हाथ जोड़े, झोलियां फैलाये, तेरे आगे भीख मांगते हैं। हम जैसे भी हैं, परमात्मा ! स्वीकार करते हैं, आज से हम और किसी के नहीं, संसार हमारा नहीं है। हम संसार के नहीं। हम तेरे हैं, तू हमारा है। बख्श, हमें परमात्मा, बख्श हमें। हम जैसे भी हैं स्वीकार करना। हमें भूलना न मेरे राम !

कभी न भूलना मेरी मां ! हे जगजननी ! हे जगदीश्वरी! हे परमेश्वरी ! हे सर्वेश्वरी ! हे हृदयेश्वरी ! मैं तो हूं कपूत! पर माता कुमाता कभी नहीं सुनी। तू कभी नहीं भूलना। इसी लिये भीख मांगते हैं तेरे दरबार में, अपने सीने से लगा कर रखना, अपनी गोद में बिठा कर रखना। सब कुछ तेरा है। तूने सब कुछ करवाया है। सब तेरी चरण शरण में समर्पित है। परमेश्वर ! कोई भूल चूक हो गई हो इतने दिनों में, हम भूलनहार हैं, तुझ बख्शनहार से क्षमा करवाते हैं। क्षमा करो परमात्मा ! कृपा करो, कृपा करो, कृपा करो मेरे राम।